बाइबल हमें आश्वस्त करती है कि यीशु ने मानव जीवन का पूरा अनुभव किया , जिसमें सभी प्रकार की परीक्षा , संघर्ष और कठिनाइयाँ शामिल थीं। जब हिब्रू 4:15 में कहा गया कि यीशु "हर प्रकार की परीक्षा में हमारे समान आज़माए गए," इसका अर्थ है कि उन्होंने वही संघर्ष और परीक्षाएँ अनुभव कीं , जो हम अनुभव करते हैं , लेकिन कभी पाप नहीं किया। यही उन्हें हमारी कमजोरियों को समझने और संकट के समय हमारी मदद करने में सक्षम बनाता है।

---

1. यीशु की मानवता : पूरी तरह परमेश्वर और पूरी तरह मानव

यीशु पूरी तरह परमेश्वर हैं और पूरी तरह मानव भी। इसे ईसाई धर्मशास्त्र में हायपोस्टैटिक यूनियन कहते हैं। इसका अर्थ है कि यीशु मसीह में दिव्य और मानव स्वभाव एक साथ हैं , लेकिन वे आपस में नहीं मिलते , बदलते या घटते। (यूहन्ना 1:14)

यीशु केवल दिव्य नहीं बल्कि पूरी तरह मानव भी थे। उन्होंने वही अनुभव किया जो हम अनुभव करते हैं :

- भूख (मत्ती 4:2)
- प्यास (यूहन्ना 19:28)
- शारीरिक पीड़ा (लूका 22:44)
- गहरी शोक भावना (यूहन्ना 11:35)

हर तरह की परीक्षा में हमारी तरह आज़माया गया

उनका दुःख वास्तविक था। उन्होंने जीवन की सभी कठिनाइयाँ अनुभव कीं – पाप के अलावा। उनकी पापरहितता ही उनकी परीक्षा और हमारी परीक्षा के बीच मुख्य अंतर है।

2. यीशु ने परीक्षा सहन की: रेगिस्तान और क्रूस

मत्ती 4:1–11 में वर्णित है कि कैसे यीशु को रेगिस्तान में तीन प्रकार से परीक्षा दी गई:

1. भूख मिटाने के लिए पत्थरों को रोटी में बदलने का प्रलोभन
2. मंदिर की चोटी से कूदकर परमेश्वर की रक्षा को परखने का प्रलोभन
3. शैतान की पूजा करके दुनिया के सभी राज्य पाने का प्रलोभन

यद्यपि वे शारीरिक रूप से कमजोर थे, उन्होंने हर बार शास्त्र के वचन से शैतान का विरोध किया। इससे उनका मानव परीक्षा को समझने और उसे पार करने की क्षमता दिखाई देती है।

क्रूस पर, उन्होंने मानव द्वारा सहा जा सकने वाले सबसे बड़े दुःख को अनुभव किया – शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से। उन्हें उपहास उड़ाया गया, मारा गया और क्रूस पर चढ़ाया गया। फिर भी, वे पिता के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में अडिग रहे।

मत्ती 27:46 में यीशु चिल्लाते हैं:
“ईली, ईली, लमबा शबकतानी?”
(मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?)

यह उनके गहन भावनात्मक और आध्यात्मिक कष्ट को दर्शाता है। फिर भी उन्होंने कभी पाप नहीं किया।

3. यीशु हमारी कठिनाइयों को समझते हैं

हिब्रू 4:15 कहता है:
“क्योंकि हमारे पास ऐसा उच्च पुरोहित नहीं है जो हमारी दुर्बलताओं को न समझे; वह हर प्रकार की परीक्षा में हमारे समान आज़माया गया, परन्तु पाप से रहित।”

क्योंकि यीशु ने हर प्रकार की मानव परीक्षा का अनुभव किया है, वे हमें उसी तरह समझ सकते हैं जैसे कोई और नहीं।
चाहे आप अकेलेपन, अस्वीकार, पीड़ा, परीक्षा या नुकसान का सामना कर रहे हों, यीशु जानते हैं कि यह कैसा अनुभव होता है।

उदाहरण के लिए:

जब आप अस्वीकृत या अलग-थलग महसूस करते हैं, तो याद रखें कि यीशु भी लोगों द्वारा

तिरस्कृत और अस्वीकार किए गए थे (यशायाह 53:3)।
जब आप प्रियजनों या मित्रों द्वारा छोड़े जाने का अनुभव करते हैं, तो याद रखें कि यीशु भी अपने शिष्यों द्वारा अपने सबसे अंधेरे समय में अकेला महसूस किए गए थे (मत्ती 26:56)।

उनका जीवन दिखाता है कि वे मानव पीड़ा को पूरी गहराई से समझते हैं और कठिन समय में हम पर दया और सहायता प्रदान कर सकते हैं।

4. पश्चाताप और मसीह में नए जीवन का आह्वान

जैसा कि यीशु हमारी कठिनाइयों को समझते हैं, वे हमें भी एक रास्ता देते हैं – पश्चाताप और उद्धार के माध्यम से।

बाइबल कहती है कि सभी मनुष्य ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से दूर हैं (रोमियों 3:23)। हमें मुक्ति की आवश्यकता है, और केवल यीशु ही हमें पाप से बचा सकते हैं। यही कारण है कि वे पृथ्वी पर आए, पापरहित जीवन जिए, क्रूस पर मरे और पुनर्जीवित हुए।

यूहन्ना 3:16 कहता है:
“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।”

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से हम परमेश्वर के साथ मेल कर सकते हैं। यह आमंत्रण उन सभी के लिए है जो पश्चाताप करें और उन पर विश्वास करें।

रोमियों 10:9 में लिखा है:
“यदि तुम अपने मुँह से स्वीकार करो कि यीशु प्रभु हैं और अपने हृदय
में विश्वास रखो कि परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित किया,
तो तुम उद्धार पाओगे।”

पश्चाताप केवल पाप के लिए पछतावा नहीं है; यह पाप से पूरी तरह दूर जाने और मसीह का अनुसरण करने का निर्णय है। जब हम पश्चाताप करते हैं और विश्वास रखते हैं, तो हमें पवित्र आत्मा प्राप्त होता है, जो हमें मसीह में नया जीवन जीने में मदद करता है (प्रेरितों के काम 2:38)।

5. बपतिस्मा और पवित्र आत्मा

बपतिस्मा बाहरी संकेत है कि हमने मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है।

प्रेरितों के काम 2:38 कहता है:

“तुम सब पश्चाताप करो और यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा ग्रहण करो, ताकि तुम्हारे पाप क्षमा हों; और तुम पवित्र आत्मा का वरदान
प्राप्त करोगे।”

बपतिस्मा विश्वासियों की पहचान को यीशु के मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान से जोड़ता है (रोमियों 6:4)। इसके माध्यम से हम अपने विश्वास और मसीह के लिए जीने का संकल्प सार्वजनिक रूप से व्यक्त करते हैं।

पवित्र आत्मा हमें परीक्षा में विजय पाने, विश्वास में स्थिर रहने और परमेश्वर के आज्ञाओं का पालन करने में मदद करता है। वह शक्ति, मार्गदर्शन और सांत्वना का स्रोत है।

6. यीशु की निरंतर प्रार्थना

हमारे उच्च पुरोहित के रूप में, यीशु आज भी हमारे लिए प्रार्थना करते हैं।

रोमियों 8:34 कहता है:
“जो मसीह यीशु ने मृत्यु को अनुभव किया, वह जीवित किया गया और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है, वही हमारे लिए प्रार्थना भी करता है।”

वे लगातार हमारे लिए प्रार्थना करते हैं और हमें हमारी परीक्षाओं में सहनशीलता और शक्ति प्रदान करते हैं।

7. अनन्त जीवन का वादा

हमारी कठिनाइयों के बीच, हमें भरोसा है कि हमारी आशा मसीह में है।

1 यूहन्ना 5:13 कहता है:
“मैं यह तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम जान सको कि जो लोग
परमेश्वर के पुत्र के नाम में विश्वास करते हैं, उन्हें अनन्त
जीवन मिला है।”

भले ही हम जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ अनुभव करें, हमें यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन की आशा है।

निष्कर्ष

यीशु हर प्रकार की परीक्षा में हमारे समान आज़माए गए, लेकिन कभी पाप नहीं किया। वे हमारी कठिनाइयों को समझते हैं और हमें कृपा, क्षमा और

शक्ति देते हैं ताकि हम उन्हें पार कर सकें। उनके जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से उन्होंने परमेश्वर के साथ मेल का मार्ग तैयार किया।

यदि आपने अभी तक यह कदम नहीं उठाया है, तो पश्चाताप करें, यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें, बपतिस्मा ग्रहण करें और पवित्र आत्मा से मार्गदर्शन पाएं। मसीह में आपको जीवन की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति और परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन की आशा मिलेगी।

रोमियों 8:37-39 याद दिलाता है:
“बल्कि इन सब में हम उस के द्वारा भी अधिक विजेता हैं, जिसने हमसे प्रेम किया। मैं निश्चित हूँ कि न तो मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत,
न सरकार, न शक्ति, न वर्तमान, न भविष्य, न ऊँचाई, न गहराई, न कोई और
कोई सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो मसीह यीशु हमारे प्रभु में है, अलग कर सकेगी।”

परमेश्वर आपका भला करे।

Share on:

□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□

WhatsApp